

कक्षा 10 · इतिहास

यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

अध्याय 1



भरत चौधरी और वनिता कुमारी ने बनाया · marushala.com

आप कौन हैं?

आपको कैसे पता कि आप भारतीय हैं? कौन-सी चीज़ें आपको भारतीय बनाती हैं?

अध्याय की सबसे पहली बात

दो सौ साल पहले यूरोप ऐसा नहीं था

- आज हर जगह **देश** हैं, हर देश की **अपनी सरकार**, अपना **झंडा** और अपनी **सीमा** है
- लेकिन दो सौ साल पहले यूरोप में ऐसे देश थे ही नहीं
- वहाँ **राजाओं के राज्य** थे, जिनमें **अलग-अलग भाषा** बोलने वाले लोग रहते थे
- लोगों की पहचान **उनके राजा से** होती थी, उनके देश से नहीं
- यह अध्याय बताता है कि **राजाओं के राज्य** कैसे देशों में बदल गए

इसी बदलाव की भावना को **राष्ट्रवाद** कहते हैं

अध्याय की सबसे ज़रूरी बात

साझेपन की यह भावना अनंत काल से नहीं थी; यह संघर्षों और नेताओं तथा आम लोगों की सरगर्मियों से निर्मित हुई थी।

पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 4

इसका मतलब है — राष्ट्र अपने आप नहीं बन जाते, उन्हें लोग बनाते हैं

1

शुरुआत के दो स्रोत

सॉर्र्यू का चित्र; रेनन का प्रश्न

सॉर्यू का चित्र, 1848

- फ्रांसीसी कलाकार फ्रेडरिक सॉर्यू ने 1848 में चार चित्रों की श्रृंखला बनाई
- उसने 'जनतांत्रिक और सामाजिक गणतंत्रों' से बने संसार का सपना दिखाया
- लोग एक लंबी क़तार में स्वतंत्रता की प्रतिमा की वंदना करते हुए चल रहे हैं
- स्वतंत्रता एक महिला है — एक हाथ में ज्ञानोदय की मशाल, दूसरे में मनुष्य के अधिकारों का घोषणापत्र
- जुलूस का नेतृत्व अमेरिका और स्विट्ज़रलैंड कर रहे हैं, क्योंकि वे तब तक राष्ट्र-राज्य बन चुके थे
- ज़मीन पर निरंकुश संस्थानों के टूटे हुए अवशेष बिखरे हैं

यह चित्र एक कल्पनादर्शी (युटोपिया) है — यानी ऐसा सपना जिसका साकार होना लगभग असंभव है

राष्ट्र क्या है?

एक राष्ट्र लंबे प्रयासों, त्याग और निष्ठा का चरम बिंदु होता है... राष्ट्र एक बड़ी और व्यापक एकता है... उसका अस्तित्व रोज़ जनमत-संग्रह है।

अर्न्स्ट रेनन (1823–92), सॉर्बोन विश्वविद्यालय, 1882

रेनन के अनुसार राष्ट्र समान भाषा, नस्ल, धर्म या क्षेत्र से नहीं बनता

2

फ़्रांसीसी क्रांति

1789 — राष्ट्रवाद की पहली अभिव्यक्ति

फ्रांसीसी क्रांति से क्या बदला

- राष्ट्रवाद की पहली स्पष्ट अभिव्यक्ति 1789 में फ्रांसीसी क्रांति के साथ हुई
- 1789 से पहले फ्रांस पर एक निरंकुश राजा का शासन था
- क्रांति से प्रभुसत्ता राजा के हाथ से निकलकर नागरिकों के समूह के हाथ में चली गई
- क्रांति ने घोषणा की कि अब लोगों द्वारा राष्ट्र का गठन होगा और वे ही उसकी नियति तय करेंगे

प्रभुसत्ता = सबसे ऊपर वाली ताकत, जिसके ऊपर कोई और न हो

सामूहिक पहचान बनाने के आठ क़दम

क़दम	इससे क्या हुआ
पितृभूमि और नागरिक के विचार	लोगों को लगा वे एक संयुक्त समुदाय हैं
नया झंडा — तिरंगा	उसने राजध्वज की जगह ली
नेशनल एसेंबली का गठन	जनता के चुने प्रतिनिधियों की सभा बनी
केंद्रीय प्रशासनिक व्यवस्था	सभी नागरिकों के लिए समान क़ानून
आंतरिक शुल्क समाप्त, एकसमान माप-तौल	पूरे देश में व्यापार आसान
क्षेत्रीय बोलियाँ हतोत्साहित	पेरिस की फ़्रेंच साझा भाषा बनी

हर क़दम ने लोगों के बीच का **फ़र्क़ कम किया** और **एकरूपता बढ़ाई**

नेपोलियन — दो अलग चेहरे

जो नुकसान किया

- फ्रांस में राजतंत्र वापस लाया
- वहाँ प्रजातंत्र को नष्ट कर दिया
- जीते इलाकों में बढ़े हुए कर
- सेंसरशिप और जबरन सैनिक भर्ती

जो फ़ायदा किया

- 1804 की नागरिक संहिता
- जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त
- सामंती व्यवस्था खत्म; किसानों को भू-दासत्व से मुक्ति
- यातायात और संचार में सुधार

इतिहास में ज़्यादातर लोग **दोनों तरफ़** होते हैं — इतिहास पढ़ने का मतलब ही दोनों तरफ़ देखना है

3

अठारहवीं सदी का यूरोप

साम्राज्य, वर्ग और नया मध्यवर्ग

उस समय यूरोप कैसा था

- मध्य अठारहवीं सदी के यूरोप में आज जैसे राष्ट्र-राज्य नहीं थे
- जर्मनी, इटली और स्विट्ज़रलैंड राजशाहियों, डचियों और कैंटनों में बँटे थे
- पूर्वी और मध्य यूरोप निरंकुश राजतंत्रों के अधीन था
- वहाँ के लोग अपने आप को एक सामूहिक पहचान का भागीदार नहीं मानते थे
- वे अलग-अलग भाषाएँ बोलते थे और विभिन्न जातीय समूहों के सदस्य थे

हैब्सबर्ग साम्राज्य — टिरॉल में जर्मन, लॉम्बार्डी में इतालवी, हंगरी में मैग्यार, गालीसिया में पोलिश

सबको जोड़ने वाली एक ही चीज़

सम्राट “इन तरह-तरह के समूहों को आपस में बाँधने वाला तत्व, केवल सम्राट के प्रति सबकी निष्ठा थी।”

लोग एक-दूसरे से नहीं, राजा से जुड़े हुए थे — और यही आगे चलकर बदला

समाज के तीन वर्ग

- कुलीन वर्ग — ज़मीन का मालिक, सबसे प्रभुत्वशाली, पर संख्या में छोटा; राजनीति में फ्रेंच बोलता था
- किसान और भूदास — जनसंख्या के अधिकांश लोग; पूर्वी यूरोप में विशाल जागीरों पर भूदास खेती करते थे
- नया मध्यवर्ग — उद्योगपति, व्यापारी और सेवा क्षेत्र के लोग, जो औद्योगीकरण से पैदा हुए
- इंग्लैंड में औद्योगीकरण अठारहवीं सदी के दूसरे भाग में शुरू हुआ

“कुलीन विशेषाधिकारों की समाप्ति के बाद शिक्षित और उदारवादी मध्य वर्गों के बीच ही राष्ट्रीय एकता के विचार लोकप्रिय हुए”

4

उदारवाद

तीन अर्थ — राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक

उदारवाद का राजनीतिक अर्थ

- उदारवाद का मतलब था व्यक्ति के लिए आज़ादी और क़ानून के समक्ष सबकी बराबरी
- राजनीतिक रूप से यह सहमति से बनी सरकार पर ज़ोर देता था
- यह निरंकुश शासक और पादरीवर्ग के विशेषाधिकारों की समाप्ति का पक्षधर था
- यह संविधान और संसदीय प्रतिनिधि सरकार चाहता था
- उन्नीसवीं सदी के उदारवादी निजी संपत्ति के स्वामित्व पर भी बल देते थे

उदारवादी कहते थे “बदलो”, रूढ़िवादी कहते थे “बचाओ”

पर बराबरी सबके लिए नहीं थी

समय	वोट का अधिकार किसे
क्रांतिकारी फ्रांस	केवल संपत्तिवान पुरुषों को
—	संपत्ति-विहीन पुरुष और सभी महिलाएँ वंचित
जैकोबिन शासन	केवल थोड़े समय के लिए सभी वयस्क पुरुषों को
नेपोलियन की संहिता	सीमित मताधिकार वापस; महिलाएँ पिताओं और पतियों के अधीन

इसी कारण पूरी उन्नीसवीं सदी में महिलाओं और गरीब पुरुषों को अधिकारों के लिए लड़ना पड़ा

एक ही 'ऐले', चार अलग नाप

शहर	एक 'ऐले' कपड़े की लंबाई
फ्रैंकफ़र्ट	54.7 सेंटीमीटर
मेंज़	55.1 सेंटीमीटर
न्यूरेम्बर्ग	65.6 सेंटीमीटर
फ़्राईबर्ग	53.5 सेंटीमीटर

और 1833 में हैम्बर्ग से न्यूरेम्बर्ग जाने वाले व्यापारी को ग्यारह सीमाशुल्क नाकों से गुजरना पड़ता था, हर बार लगभग 5% शुल्क

इसी समस्या का हल — जॉल्वेराइन

1834 प्रशा की पहल पर बना शुल्क संघ, जिसमें अधिकांश जर्मन राज्य शामिल हुए। इसने शुल्क अवरोध समाप्त किए और मुद्राओं की संख्या तीस से घटाकर दो कर दी

“एक मुक्त आर्थिक व्यवस्था ही राष्ट्रीय भावनाओं के उत्पन्न होने का एकमात्र ज़रिया है” — फ्रेडरिख लिस्ट, 1834

5

रूढ़िवाद और वियना संधि

1815 — पुरानी व्यवस्था लौटाने की कोशिश

नया रूढ़िवाद

- रूढ़िवाद वह दर्शन है जो परंपरा, स्थापित संस्थानों और रिवाजों पर ज़ोर देता है
- वह तेज़ बदलावों की बजाय क्रमिक विकास को प्राथमिकता देता है
- रूढ़िवादी राजतंत्र, चर्च, सामाजिक ऊँच-नीच, संपत्ति और परिवार को बनाए रखना चाहते थे
- पर अधिकतर रूढ़िवादी क्रांति से पहले के दौर में वापसी नहीं चाहते थे
- उन्होंने जान लिया था कि आधुनिकीकरण राजतंत्र को मज़बूत बनाने में सक्षम है

पुराने रूढ़िवादी कहते थे “कुछ मत बदलो”; नए कहने लगे “थोड़ा बदलो, ताकि बाकी सब वैसा ही रहे”

वियना संधि, 1815 — मुख्य फैसले

क्षेत्र	फैसला
फ़्रांस	बूबों वंश बहाल; जीते हुए इलाक़े वापस
फ़्रांस की सीमाओं पर	कई राज्य कायम, ताकि वह फिर विस्तार न कर सके
उत्तर में	नीदरलैंड्स का राज्य, जिसमें बेल्जियम शामिल
ऑस्ट्रिया को	उत्तरी इटली का नियंत्रण
रूस को	पोलैंड का एक हिस्सा
जर्मन महासंघ	नेपोलियन का बनाया 39 राज्यों वाला महासंघ बरकरार

सेंसरशिप और गुप्त संगठन

- 1815 की रूढ़िवादी व्यवस्थाएँ निरंकुश थीं और आलोचना बर्दाश्त नहीं करती थीं
- सरकारों ने सेंसरशिप के नियम बनाए — अखबारों, किताबों, नाटकों और गीतों पर नियंत्रण
- इसीलिए उदारवादी राष्ट्रवादियों का मुख्य मुद्दा प्रेस की आज़ादी था
- दमन के भय से अनेक उदारवादी-राष्ट्रवादी भूमिगत हो गए
- गुप्त संगठन बने, जो क्रांतिकारियों को प्रशिक्षण देते और विचारों का प्रसार करते थे

चित्र 6 में एक क्लब की दीवार पर लिखा है — “हमें कब तक सोचने दिया जाएगा?”

मैटरनिख की सबसे बड़ी चिंता

हमारी सामाजिक व्यवस्था का **सबसे खतरनाक दुश्मन।**

मैटरनिख ने ज्युसेपे मेत्सिनी के बारे में कहा

मेत्सिनी — जन्म 1805, जेनोआ; कार्बोनारी का सदस्य; 'यंग इटली' (मारसेई) और 'यंग यूरोप' (बर्न) के संस्थापक

6

क्रांतियों का युग

1830–1848 — और संस्कृति की भूमिका

क्रांतियों का युग

- 1 1821**
यूनान का स्वतंत्रता संग्राम आरंभ; लॉर्ड बायरन ने धन जुटाया और लड़ने भी गए
- 2 1824**
बायरन की बुखार से मृत्यु
- 3 जुलाई 1830**
फ्रांस में क्रांति; बूबों राजा हटे, लुई फिलिप आया; बेल्जियम अलग हुआ
- 4 1831**
रूस के विरुद्ध पोलिश विद्रोह, जो कुचल दिया गया
- 5 1832**
कुस्तुनतुनिया की संधि — यूनान स्वतंत्र राष्ट्र बना
- 6 1845**
सिलेसिया के बुनकरों का विद्रोह
- 7 1848**
पेरिस में क्रांति; 18 मई को फ्रैंकफर्ट संसद

“जब फ्रांस छींकता है तो बाकी यूरोप की सर्दी-जुकाम हो जाता है” — मैटरनिख

संस्कृति ने राष्ट्र बनाने में क्या किया

- “राष्ट्रवाद का विकास केवल युद्धों और क्षेत्रीय विस्तार से नहीं हुआ”
- कला, काव्य, कहानियों-किस्सों और संगीत ने राष्ट्रवादी भावनाओं को गढ़ा
- रूमानीवाद ने तर्क और विज्ञान की जगह भावनाओं और अंतर्दृष्टि पर ज़ोर दिया
- योहान गॉटफ्रीड — सच्ची जर्मन संस्कृति आम लोगों (das volk) में निहित है
- राष्ट्र की सच्ची आत्मा लोकगीतों, जन-काव्य और लोकनृत्यों से प्रकट होती है

यह ज़रूरी था क्योंकि अधिकांश लोग निरक्षर थे — उन तक संदेश किताब से नहीं, गीत और कहानी से पहुँच सकता था

छह साल, गाँव-गाँव, एक विचार

1812 जैकब और विल्हेल्म ग्रिम ने छह साल तक गाँव-गाँव जाकर लोक कथाएँ इकट्ठी कीं और उनका पहला संग्रह प्रकाशित किया। बाद में उन्होंने 33 खंडों में जर्मन भाषा का शब्दकोश भी बनाया

वे इसे जर्मन राष्ट्रीय पहचान गढ़ने की व्यापक योजना का हिस्सा मानते थे

पोलैंड — जब देश मिट गया, पर पहचान बची

- अठारहवीं सदी के अंत में **रूस, प्रशा और ऑस्ट्रिया** ने **पोलैंड का विभाजन** कर दिया था
- “यद्यपि पोलैंड अब स्वतंत्र भू-क्षेत्र नहीं था, किंतु संगीत और भाषा के ज़रिये **राष्ट्रीय भावना जीवित रखी गई**”
- **कैरोल कुर्पिस्की** ने **पोलोनेस और माजुरका** जैसे लोकनृत्यों को **राष्ट्रीय प्रतीकों** में बदला
- **रूसी क़ब्जे के बाद पोलिश भाषा स्कूलों से हटाकर रूसी जबरन लादी गई**
- 1831 के असफल विद्रोह के बाद लोगों ने **भाषा को हथियार** बनाया — चर्च और धार्मिक शिक्षा में पोलिश चलाई
- **बड़ी संख्या में पादरियों और बिशपों को जेल में डाला गया और साइबेरिया भेजा गया**

राष्ट्र सिर्फ़ ज़मीन नहीं होता — वह भाषा, संगीत और स्मृति में भी ज़िंदा रह सकता है

7

1848

भूख की क्रांति और पढ़े-लिखों की क्रांति

भूख, कठिनाइयाँ और जन विद्रोह

- 1830 का दशक यूरोप में भारी कठिनाइयाँ लेकर आया
- जनसंख्या में ज़बरदस्त वृद्धि; नौकरी ढूँढ़ने वालों की तादाद रोज़गार से अधिक
- ग्रामीण आबादी शहरों की भीड़ से भरी ग़रीब बस्तियों में रहने लगी
- लघु उत्पादकों को इंग्लैंड से आयातित सस्ते मशीनी कपड़े से कड़ी प्रतिस्पर्धा
- जहाँ कुलीन वर्ग सत्ता में था, वहाँ कृषक सामंती शुल्कों के बोझ तले दबे थे
- 1848 में खाने-पीने की कमी और बेरोज़गारी से पेरिस के लोग सड़कों पर उतर आए

राष्ट्रवाद केवल विचारों का आंदोलन नहीं था — भूख भी लोगों को सड़कों पर लाती थी

सिलेसिया के बुनकर, 1845

काम के लिए बेताब लोगों का फ़ायदा उठा कर ठेकेदारों ने बनवाए जाने वाले माल की कीमतें गिरा दी हैं।

पत्रकार विल्हेम वोल्फ़

बुनकरों ने ज़्यादा मज़दूरी माँगी; ठेकेदार 24 घंटे बाद सेना बुलाकर लौटा; टकराव में ग्यारह बुनकरों को गोली मार दी गई

फ्रैंकफ़र्ट संसद — उम्मीद और असफलता

तथ्य	विवरण
तारीख और संख्या	18 मई 1848 • 831 निर्वाचित प्रतिनिधि
स्थान	सेंट पॉल चर्च, फ्रैंकफ़र्ट
मुख्य काम	जर्मन राष्ट्र के लिए संविधान का प्रारूप; राजा को संसद के अधीन रहना था
असफलता 1	प्रशा के राजा फ्रेडरीख विल्हेम चतुर्थ ने ताज अस्वीकार किया
असफलता 2	कुलीन वर्ग और सेना का विरोध बढ़ गया
असफलता 3	मध्य वर्गों ने मज़दूरों-कारीगरों की माँगों का विरोध किया और उनका समर्थन खो दिया

अंत में सैनिकों को बुलाया गया और एसेंबली भंग होने पर मजबूर हुई

महिलाओं ने क्या किया — और क्या नहीं मिला

- महिलाओं ने अपने राजनीतिक संगठन स्थापित किए
- उन्होंने अखबार शुरू किए
- उन्होंने राजनीतिक बैठकों और प्रदर्शनों में शिरकत की
- इसके बावजूद उन्हें एसेंबली के चुनाव में मताधिकार से वंचित रखा गया
- फ्रैंकफर्ट संसद में उन्हें केवल प्रेक्षकों की हैसियत से दर्शक-दीर्घा में खड़े होने दिया गया

लुइज़े ऑटो-पीटर्स — “स्वतंत्र पुरुषों को परतंत्रता से घिरे रहना मंज़ूर नहीं होना चाहिए”

क्रांति हारी, पर बेकार नहीं गई

1848

“रूढ़िवादी ताकतें उदारवादी आंदोलनों को दबा पाने में कामयाब हुई, किंतु वे पुरानी व्यवस्था बहाल नहीं कर पाई।” इसके बाद हैब्सबर्ग क्षेत्रों और रूस में भूदासत्व और बंधुआ मजदूरी समाप्त कर दी गई

राजाओं को समझ आ गया कि रियायतें देकर ही क्रांति और दमन का चक्र समाप्त किया जा सकता है

8

जर्मनी और इटली का निर्माण

अब सेना और कूटनीति का दौर

जर्मनी का एकीकरण

1 1848

मध्यवर्गीय जर्मनों ने निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र-राज्य बनाना चाहा

2 —

यह उदारवादी पहल राजशाही और फ़ौज ने मिलकर दबा दी; जुंकरों ने भी उनका साथ दिया

3 —

इसके बाद प्रशा ने एकीकरण का नेतृत्व संभाला

4 —

ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक; उसने प्रशा की सेना और नौकरशाही की मदद ली

5 सात वर्ष

ऑस्ट्रिया, डेन्मार्क और फ़्रांस से तीन युद्धों में प्रशा को जीत

6 18 जनवरी 1871

वर्साय के शीशमहल में विलियम प्रथम जर्मनी का सम्राट घोषित

1848 में जनता ने संसद से राष्ट्र बनाना चाहा और असफल रही — 1871 में सेना ने बना दिया

इटली के एकीकरण की तीन कड़ियाँ

व्यक्ति	भूमिका
ज्युसेपे मेत्सिनी	विचार दिया — 1830 के दशक में एकीकृत गणराज्य का कार्यक्रम; 'यंग इटली'
काउंट कावूर	कूटनीति की — फ्रांस से संधि, जिससे 1859 में ऑस्ट्रिया हारा
ज्युसेपे गैरीबॉल्डी	लड़ाई लड़ी — 1860 में 'हज़ार लोगों का अभियान'; 'रेड शर्ट्स' की संख्या 30,000 तक पहुँची

1861 में विक्टर इमेनुएल द्वितीय एकीकृत इटली का राजा घोषित हुआ

एक चौंकाने वाला सच

दक्षिणी इटली में जिन आम किसानों ने गैरीबॉल्डी को समर्थन दिया था, उन्होंने इटालिया के बारे में कभी सुना ही नहीं था और वे मानते थे कि ला टालिया विक्टर इमेनुएल की पत्नी थी।

पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 21

‘राष्ट्र’ का विचार पहले पढ़े-लिखे वर्ग तक ही सीमित था और आम लोगों तक धीरे-धीरे पहुँचा

ब्रिटेन की अजीब दास्तान

- ब्रिटेन में राष्ट्र-राज्य का निर्माण किसी क्रांति का परिणाम नहीं था — यह एक लंबी प्रक्रिया थी
- अठारहवीं सदी के पहले ब्रितानी राष्ट्र था ही नहीं
- अंग्रेज़, वेल्श, स्कॉट और आयरिश की मुख्य पहचान **नृजातीय** थी
- **1688** में आंग्ल संसद ने राजतंत्र से ताक़त छीन ली
- **1707** के ऐक्ट ऑफ़ यूनियन से 'यूनाइटेड किंगडम ऑफ़ ग्रेट ब्रिटेन' बना
- स्कॉटिश हाइलैंड्स के लोगों को गेलिक भाषा बोलने या राष्ट्रीय पोशाक पहनने की मनाही थी
- **1801** में आयरलैंड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंगडम में शामिल कर लिया गया

यहाँ राष्ट्र जनता की क्रांति से नहीं, एक राष्ट्र के दूसरों पर प्रभुत्व से बना

9

राष्ट्र की दृश्य-कल्पना

राष्ट्र को चेहरा कैसे दें?

राजा का चित्र बन सकता है — पर 'देश' का चित्र कैसे बनेगा?

अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के कलाकारों ने राष्ट्र का **मानवीकरण** करके यह समस्या हल की

मारीआन और जर्मैनिया

मारीआन — फ़्रांस

- लोकप्रिय ईसाई नाम, जिसने जन-राष्ट्र के विचार को रेखांकित किया
- चिह्न — लाल टोपी, तिरंगा और कलगी
- ये स्वतंत्रता और गणतंत्र के प्रतीक हैं
- प्रतिमाएँ सार्वजनिक चौकों पर; छवि सिक्कों और डाक टिकटों पर

जर्मैनिया — जर्मनी

- जर्मन राष्ट्र का रूपक
- सिर पर बलूत पत्तियों का मुकुट
- क्योंकि जर्मन बलूत वीरता का प्रतीक है
- चित्रकार — फ़िलिप वेट (1848) और लॉरेन्ज़ क्लासेन (1860)

रूपक = जब किसी अमूर्त विचार को किसी व्यक्ति या चीज़ के ज़रिए इंगित किया जाए

जर्मनिया के प्रतीकों के अर्थ

प्रतीक	अर्थ
टूटी हुई बेड़ियाँ	आज़ादी मिलना
बाज़-छाप कवच	जर्मन साम्राज्य की प्रतीक-शक्ति
बलूत पत्तियों का मुकुट	बहादुरी
तलवार	मुकाबले की तैयारी
तलवार पर लिपटी जैतून की डाली	शांति की चाह
काला, लाल और सुनहरा तिरंगा	1848 के उदारवादी-राष्ट्रवादियों का झंडा
उगते सूर्य की किरणें	एक नए युग का सूत्रपात

10

राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद

जब विचार का चेहरा बदल गया

राष्ट्रवाद का बदला हुआ चेहरा

- उन्नीसवीं सदी की अंतिम चौथाई तक राष्ट्रवाद का वह आदर्शवादी उदारवादी-जनतांत्रिक स्वभाव नहीं रहा
- अब राष्ट्रवाद सीमित लक्ष्यों वाला संकीर्ण सिद्धांत बन गया
- राष्ट्रवादी समूह एक-दूसरे के प्रति अनुदार होते चले गए और लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहते थे
- प्रमुख यूरोपीय शक्तियों ने अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों के लिए अधीन लोगों की राष्ट्रवादी आकांक्षाओं का इस्तेमाल किया

पहले वह कहता था “हम आज़ाद होना चाहते हैं” — अब कहने लगा “हम दूसरों से बड़े हैं”

बाल्कन क्षेत्र में तनाव क्यों पनपा

- क्षेत्र में गहरी भौगोलिक और जातीय भिन्नता थी; निवासी **स्लाव** कहलाते थे
- बाल्कन का बड़ा हिस्सा ऑटोमन साम्राज्य के नियंत्रण में था
- रूमानी राष्ट्रवाद के फैलने और ऑटोमन साम्राज्य के विघटन से स्थिति विस्फोटक हो गई
- अधीन राष्ट्रीयताएँ एक के बाद एक स्वतंत्रता की घोषणा करने लगीं
- बाल्कन राज्य एक-दूसरे से भारी ईर्ष्या करते थे और हर एक ज़्यादा इलाका चाहता था
- रूस, जर्मनी, इंग्लैंड और ऑस्ट्रो-हंगरी — हर ताकत वहाँ अपना प्रभाव बढ़ाना चाहती थी

“इससे इस इलाके में कई युद्ध हुए और अंततः प्रथम विश्व युद्ध हुआ”

अध्याय का अंतिम संदेश

राष्ट्रवाद के यूरोपीय विचार कहीं और नहीं दोहराए गए, क्योंकि **हर जगह लोगों ने अपनी तरह का विशिष्ट राष्ट्रवाद विकसित किया।**

पाठ्यपुस्तक, पृष्ठ 27

यही विचार आगे चलकर **भारत** पहुँचा और **साम्राज्यवाद के खिलाफ हथियार** बना — वही अगले अध्याय का विषय है

चार तारीखें — बस इतना पक्का कर लीजिए

4

1789 क्रांति · **1815** वापसी · **1848** विस्फोट · **1871** एकीकरण

बाक़ी सब तारीखें इन्हीं के आगे-पीछे बैठ जाएँगी

जो पढ़ाते हैं, वही लिखते और जाँचते हैं

इसे बनाने वाले



भरत चौधरी

व्याख्याता

रा.उ.मा.वि. जेठान्तरी · ब्लॉक समदड़ी, जिला बालोतरा



वनिता कुमारी

व्याख्याता

रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा · ब्लॉक एवं जिला बालोतरा

फ़ोन के कैमरे से स्कैन कीजिए



यह स्लाइड शो ऑनलाइन

marushala.com/teach/slides/class-10/history/europe-mein-rashtravad-ka-uday



विद्यार्थियों के लिए रिवीजन नोट्स

marushala.com/notes/class-10/history/revision-notes/europe-mein-rashtravad-ka-uday



MARUSHALA

marushala.com

निःशुल्क · बिना लॉगिन · हिन्दी और अंग्रेज़ी